



चंद्रपुर। 'मेरा भारत स्वस्थ भारत' अभियान का शुभारंभ करने के पश्चात परमात्म स्मृति में खड़े ब्र.कु. कुसुम, महाराष्ट्र के पर्यावरण मंत्री संजय देवानले, डॉ.अईचवार, वाईस चांसलर, डॉ. सचीन पर्व, डॉ. सरद सलफाले, सोना देसमुख तथा ब्र.कु. दिपक।

अहिंसा से होगी... - पेज 1 का शेष..

के संस्थापक महामण्डलेश्वर डा. शाश्वतानंद गिरी ने अपने संबोधन में कहा कि मनुष्य का अहंकार ही हिंसा का मुख्य कारण है और आत्म अभिमानी स्थिति में जोकर ही अहंकार खत्म किया जा सकता है। भगवद गीता को हिंसक युद्ध का प्रेरक कहना गलत बताते हुए उन्होंने कहा कि यह आंतरिक विकारों पर विजय पाने के अहिंसक युद्ध को प्रेरक है। मन में आपसी वैरभाव की भावना को खत्म करके ही जीवन व समाज में शान्ति व अहिंसा की पुनर्स्थापना की जा सकती है। आशा बहन ने कहा कि स्वयं को आत्मा निश्चय करने से दुःखों से पार पाया जा सकता है। विभिन्न विद्वानों द्वारा गीता के बारे में दिए गए व्याख्या की चर्चा की गई। देह तो साधन मात्र है और आध्यात्मिक चेतना का विकास होने पर ही हम मनुष्य कहलाने योग्य बनते हैं।

महाशक्ति पीठ दिल्ली के संस्थापक महामण्डलेश्वर स्वामी सर्वानंद सरस्वती ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज संस्था ने विश्वभर के 135 देशों में आध्यात्मिक ज्ञान व राजयोग की शिक्षा देकर शान्ति व अहिंसा का झण्डा बुलंद कर भारत का नाम पूरे विश्व में प्रसिद्ध किया है। संस्था ने स्व परिवर्तन से विश्व परिवर्तन का संदेश देकर दुनिया को स्वर्ग में बदलने का बीड़ा उठाया है जो अनुकरणीय है। संतुष्टता के आधार से ही स्वयं में शान्ति एवं अहिंसा को स्थापित किया जा सकता है। समाजसेवी डा. पुष्पा पाण्डे ने कहा कि श्रीमद् भगवत गीता में बताया है कि पांच विकार ही अशांति का मुख्य कारण है। गीता ज्ञान दाता अहिंसक युद्ध की विधि बताते हुए कहते हैं कि ज्ञान रूपी तलवार से इन विकारों को खत्म करके ही शान्ति स्थापित की जा सकती है। उन्होंने उदाहरण देते हुए कहा कि राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने पुरी दुनिया में अहिंसा की शक्ति का लोहा मनवाया और देश को आजाद करवाया। इसी तर्ज पर जब जन-जन अहिंसा को अपने मन व जीवन में धारण कर लेगा तो स्वतः ही पूरे विश्व में शान्ति स्थापित हो जाएगी। राजयोगी बी.के. उषा बहन, माउंट आबू ने राजयोग का सामूहिक अभ्यास करवाते हुए कहा कि मन को आत्मकेन्द्रित एवं परमात्मा की स्मृति में टिकाने से ही आंतरिक शान्ति व सकारात्मकता की शक्ति उत्पन्न होती है। जिससे ईशान नकारात्मक, हिंसक विकारों से अपने को व समाज को बचा सकता है। उन्होंने मैडिटेशन द्वारा सबको गहरी शान्ति का अनुभव करवाया।

इस अवसर पर कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के वाईस चांसलर डा. डी.एस.संधू, ब्रह्माकुमारीज संस्था के गुडगांव स्थित रिट्रीट सेंटर की निदेशिका राजयोगिनी बी.के. आशा, दिल्ली के कवि देवीचंद कौशिक आदि ने सभा को संबोधित किया। बी.के. शिखा ने सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया।

आपसी सद्भाव ... - पेज 1 का शेष..

को राह दिखाने वाली लाइफ है। ब्र.कु.अमीरचंद ने कहा कि हमें आध्यात्मिक ज्ञान से नजरिया बदल जाना है। जीवन में हम सहजता से जी सकते हैं। भारत के पूर्व प्रधानमंत्री स्वर्गीय पी वी नरसिंहाराव जी की सुपत्री एवं प्रख्यात समाज सेविका एस वाणी देवी वातावरण व व्यवहार में आध्यात्मिकता का पुट देने पर ही समाज में सद्भाव आयेगा।

ब्र.कु.प्रेम ने कहा कि समझ से मनुष्य का जीवन सुधरता है। एक का सुधरेगा तो कहा जाता है तेरे भाने सबका भला। एक प्रजापिता ब्रह्मा को समझ में आ गई वह चेतन शक्ति आत्मा है उन्होंने परिवर्तन किया तो उनके पीछे कारवां निकल गया। दैहिक भान से दृष्टि बदल आत्मिक बन जाए ऐसा इस आध्यात्मिक ज्ञान से जुड़ा है। उदार चरित्र वाले के लिए वसुधा ही परिवार होता है।

प्रभाग के मुख्यालय संयोजक ब्र.कु.अवतार ने अतिथियों का धन्यवाद किया। मुंबई की ब्र.कु.वंदना ने मंच का संचालन किया।

श्रेष्ठ संकल्पों का बल

संकल्प शक्ति विश्व की सबसे बड़ी शक्ति है। कहा गया है - जैसा सोचोगे, वैसा बनोगे। मनुष्यात्मा का हर संकल्प उसके शरीर के अन्दर स्थित डी.एन.ए. की संरचना पर प्रभाव डालता है। डी.एन.ए.एक ऐसा रासायनिक पदार्थ है जो मनुष्य के हर उत्सर्जित पदार्थ में मौजूद होता है और शरीर की रचना को प्रभावित करता है परन्तु डी.एन.ए. की रचना हमारी सोच पर निर्भर करती है। किसी भी बच्चे का सोचने, बोलने, चलने का ढंग काफी सीमा तक पिता के अनुरूप होता है। इसमें दादा, दादी, परदादा, नाना, नानी आदि के डी.एन.ए. का भी प्रभाव होता है। शरीर शास्त्रियों तथा वैज्ञानिकों का यह भी मानना है कि शरीर के अन्दर अलग-अलग तरह के खाव होते हैं, वे भी आत्मा के संकल्पों तथा भावनाओं से प्रभावित होते हैं। इसी कारण आजकल अनेक ऐसे व्यक्तियों जन्म ले रही हैं। जिनके कारण और निवारण, चिकित्सकों की समझ से बाहर होते हैं।

हर जन्म लेने वाले शिशु के शरीर निर्माण में उसके माता-पिता के तथा स्वयं उसके संकल्प और कर्म महत्वपूर्ण कार्य निभाते हैं। आत्मा जैसा कर्म करती है वैसा ही वलय (ओर) उसके चारों ओर बनता जाता है। माता-पिता के कर्मों के फल का असर भी बच्चों पर आता है और उनके अपने संचित कर्म भी उनके सामने अवश्य आते हैं। कई बार बच्चों के संस्कार माता-पिता के घर पहुँचा सकता है जैसे अमृतघट को जहर बनाने के लिए, जहरको एक बूँद ही काफी काम कर देती है। गर्भावस्था के पहले या दौरान माता-पिता की विचारधारा का असर, बच्चों के लिए तैयार होने वाले डी.एन.ए. की संरचना पर पड़ता है। इसलिए प्यारे शिव बाबा हमें इशारा देते हैं कि आपका एक-एक संकल्प सतयुग की तैयारी के लिए बड़ा महत्व रखता है। प्रकृति के कण-कण पर हमारी अवस्था का प्रभाव पड़ता जा रहा है। हमारा योगबल आत्माओं का भी और तत्वों का भी तमोगुण हर रहा है। तमोगुण नष्ट होना माना सतोगुण बचना और सतोगुण जहाँ है वहाँ कष्ट हो नहीं सकता। इसलिए वहाँ जन्म-मरण सहित अन्य प्रकार के कष्ट हो नहीं सकता। इसलिए वहाँ जन्म-मरण सहित अन्य प्रकार के कष्ट भी नहीं होंगे। हम अपनी विचारधारा को अति पावन. सतोगुणी बना कर आत्मा को सर्व प्रकार की भोगनाओं से मुक्त कर सकते हैं। पावन कर्तव्य में मददगार बन सकते हैं। जरूरत है दृढ़ता पूर्वक अथक बन आगे बढ़ते रहने की।

मित्रता के भाव... -पेज 10 का शेष

आपत्तिकाल में साथ नहीं छोड़ता है तथा समय पड़ने पर सहायता करता है। ऋग्वेद में कहा गया है कि जो मनुष्य मित्रता मानने वाले मित्र को आवश्यकता पड़ने पर छोड़ देता है, उसका पढ़ा, लिखा, सुना सब शास्त्र-ज्ञान व्यर्थ होता है। वह पुण्य के मार्ग से भटक जाता है। इसी प्रकार यजुर्वेद में ऋषि परस्पर सहयोग की भावना विकसित करने को मित्रता के लिए आवश्यक मानते हैं। ऋषि कहते हैं कि हे मनुष्यों! तुम मुझे दो, मैं तुम्हें देता हूँ। तुम मेरे लिए पदार्थ रखो, मैं तुम्हारे लिए रखता हूँ। तुम मुझे वस्तु दो, मैं तुम्हें वस्तु देता हूँ। हम एक-दूसरे का सहयोग करते हुए मित्र भाव से रहें। यजुर्वेद में एक अत्यन्त उत्तम प्रार्थना आई है जिसमें साधक ईश्वर से कामना करता है कि वह सबका प्रिय बने और सबको वह प्रिय समझे। साधक कहता है कि हे परमात्मा! मुझे दृढ़ता प्रदान करो। सारे प्राणी मात्र मुझे मित्र की भाँति देखें। मैं भी सभी जीवों को मित्र की दृष्टि से देखूँ और हम सब परस्पर मित्र की दृष्टि से देखें। वेदों में पकृति और पशुओं से भी मैत्री भाव रखने का संदेश दिया गया है। जब हम सृष्टि के प्रत्येक अंग को अपना मित्र समझेंगे तभी यह विश्व भी शान्ति और सौहार्द का केन्द्र बनेगा।

दूसरो की अपेक्षा का मतलब

उनके प्रति हमारा नजरिया

प्रश्न:- दूसरो की अपेक्षा का मतलब क्या होता है ?

उत्तर:- अपेक्षा का मतलब दूसरे के द्वारा भविष्य में किये जाने वाले व्यवहार को पहले बता देना की मैं विश्वास करती हूँ कि आप ऐसा करेंगे। आप क्या करने वाले हैं उसका मैं पहले से ही ही अनुमान लगा लेती हूँ।

प्रश्न:- जब कुछ गलत होता है तो हम यही कहते हैं कि हमें आपसे ये उम्मीद नहीं थी।

उत्तर:- सही है। यह चिन्हित करने वाली बात है। आपको खुद भी नहीं पता....।

प्रश्न:- मैंने तो आपके व्यवहार का पहले से ही अनुमान लगा लिया था। और जब आपका व्यवहार वैसा नहीं हुआ, मैंने जो आपसे अपेक्षा बनाकर रखी थी तो मैं कहती हूँ कि आप मेरी उम्मीदों पर खरा नहीं उतरे। हमें अपने-आप से तार्किक रूप से ये पूछना पड़ेगा कि यह उपाय कितना अच्छा है! अब प्रश्न उठता है कि 'मैं कौन हूँ' ?

उत्तर:- 'मैं कौन हूँ' यह तो स्वयं एक प्रश्न है, फिर भी लोग कहते हैं कि क्यों पैरेंट बच्चे से उम्मीद न करें, पति-पत्नी एक-दूसरे से उम्मीद न करें, टीचर अपने स्टूडेंट से उम्मीद न करें, ये एक ऐसी चीज है जिसे छोड़ना बहुत ही कठिन है।

प्रश्न:- वास्तव में हमें वो तब तक पता नहीं चल पाता जब तक की वो फेल नहीं होता कि मैंने उससे क्या उम्मीद किया था।

उत्तर:- अब सारे दिन में हमें ये देखना है कि हमारी अपेक्षा का आधार क्या है। आप जिस तरह से बोलते आये हैं मेरे साथ कल भी इसी तरह से बात करेंगे। लेकिन कल आपने एक अलग तरीके से बात की जो कि मेरी आशा के एकदम विपरीत थी। किसी के अतीत के साथ उसको तुलना करना की पहले ये जैसे बात करते आये थे अब भी वैसा ही करेंगे। यह मैं पहले से ही दूसरे के लिए निर्णय ले लेती हूँ और फिर जब वो वैसा नहीं करते हैं तो मैं हीन भावना से ग्रसित हो जाती हूँ। अब हम दो बातों में फसते हैं - एक तो औरों से अपेक्षा करना और दूसरा, दूसरों की उम्मीदों को पूरा करना। ये दोनों चीजें हमारी खुशी को बहुत ज्यादा प्रभावित करती है।

प्रश्न:- बच्चे कितनी बार कहते हैं, पालक कितनी बार बोल रहे होते हैं कि मुझे क्या चाहिए या आप मुझे क्या उम्मीद करते हैं ?

उत्तर:- इन दोनों उदाहरणों में क्या है ? यदि आप मेरी अपेक्षा को पूरा करते हैं तो मैं खुश रहूँगी, यदि मैं आपके उम्मीदों को पूरा करती हूँ तो क्या आप खुश होंगे ? इन दोनों चीजों में अपेक्षा का खुशी के साथ सीधा संबंध है। हमें ये देखना पड़ेगा कि हमने अपनी खुशी को किन चीजों पर निर्भर कर दिया है कि भविष्य में ये क्या करेंगे, कैसे बात करेंगे, कैसे व्यवहार करेंगे, वो मैं पहले आशा करती हूँ और उसके ऊपर अपनी खुशी को निर्भर कर देती हूँ, फिर वो वैसा नहीं करते तो मैं दुःखी हो जाती हूँ।

प्रश्न:- अब हम बिल्कुल उसी धारणा पर आ गये हैं जिस पर हमारा पूरा ढाँचा खड़ा है। अभी तक आप मुझे एक तरह से व्यवहार करते हुए आये, एक तरह से बात करते हुए आये। अगर आप मुझे अलग तरह से बात करेंगे तो यह नैचुरल है कि मुझे इससे दुःख पहुंचेगा।

उत्तर:- नैचुरल है कि दुःख पहुंचेगा क्योंकि आपने मेरे व्यवहार को देखकर अपना भरोसा(बिलीव सिस्टम) बदल लिया। ये बहुत मुश्किल हो जाता है कि हम भविष्य के व्यवहार पर अपनी खुशी को निर्भर कर देते हैं तो वो खुशी कैसे स्थायी रहेगी ? वो तो एक भविष्य का कल्पना है जिसे हम भविष्य से संबंधित कह सकते हैं। अगर हमारी वो कल्पना सही नहीं निकली तो मेरी खुशी गई। और फिर मैं उसका दोष किस पर डाल देती हूँ - आप पर, क्योंकि आपने मेरी अपेक्षाओं को पूरा नहीं किया। मैंने अपेक्षा पहले निर्मित क्यों किया ?

प्रश्न:- मुझे पता भी नहीं होता कि मैंने की हुई है ये।

उत्तर:- अब हमें इसी चीज की जागृति रखनी है कि हम किन-किन लोगों से क्या-क्या अपेक्षा रखते हैं।

प्रश्न:- ऐसे तो हम सबसे दूर होते जायेंगे!

उत्तर:- दूर क्यों होते जायेंगे सबसे ? आपको पता है कि अगर हम अपेक्षा नहीं रखें तो इससे हमारे संबंध कितने अच्छे हो जायेंगे। -कमशः



-ब्र.कु.शिवानी